अदृश्य नौकरियां

भारतीय रिजर्व बैंक ने इस वर्ष भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 7.2% रहने का अनुमान लगाया है।मध्यम अवधि के पूर्वानुमान, जैसे कि आईएमएफ द्वारा, आने वाले वर्षों में यह गति जारी रहने की उम्मीद है।लेकिन गुणवत्तापूर्ण नौकरियों की कमी की चिंता बनी हुई है।

हाल ही में जारी आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के अनुसार भारत में श्रम बाजार की स्थिति:

- समग्र स्तर पर, श्रम बल भागीदारी दर (15 वर्ष और उससे अधिक) 2017-18 में 49.8% से बढ़कर 2023-24 में 60.1% हो गई है।
- इसका मुख्य कारण महिलाओं की भागीदारी में तीव्र वृद्धि है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां इस अवधि में यह 24.6% से बढ़कर 47.6% हो गई है।
- महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि शायद संकट का संकेत है, अर्थात महिलाएं अपनी घरेलू आय बढ़ाने के लिए घर से बाहर निकल रही हैं।
- वेतनभोगी रोजगार में लगी महिलाओं की हिस्सेदारी में गिरावट आई है। अब ज्यादातर महिलाएं स्वरोजगार में लगी हैं। देश भर में स्वरोजगार करने वाली महिलाओं की हिस्सेदारी 2017-18 में 51.9% से बढ़कर 2023-24 में 67.4% हो गई है।
- श्रम शक्ति का एक बडा हिस्सा अभी भी अनौपचारिक फर्मों में कार्यरत है।
- अनौपचारिक उद्यमों (स्वामित्व और भागीदारी) में लगे श्रमिकों का प्रतिशत 2023-24 में 73.2 प्रतिशत था। हालांकि यह 2022-23 में 74.3% से मामूली रूप से कम हुआ है, लेकिन यह 2017-18 में 68.2% के अनुमान से अधिक है।
- कृषि में लगे श्रम बल का हिस्सा लगातार बढ़ रहा है, जबकि विनिर्माण में लगे श्रम बल का हिस्सा लगभग स्थिर बना हुआ है।
- 2017-18 में कृषि क्षेत्र में 44.1% कर्मचारी कार्यरत थे। 2023-24 तक यह बढ़कर 46.1% हो जाएगा, जो पिछले दशकों में कृषि क्षेत्र में गिरावट की प्रवृत्ति को उलटने को दर्शाता है।
- विनिर्माण में लगे श्रम बल का हिस्सा लगभग समान ही रहेगा, 2021-22 में 11.6% और 2023- 24 में 11.4%।
- बेरोजगारी दर (15 वर्ष और उससे अधिक) 2017-18 में 6% से घटकर 2023-24 में 3.2% हो गई है।
- यद्यपि युवा बेरोजगारी दर 2017-18 में 17.8% से घटकर 2023-24 में 10.2% हो गई है, फिर भी यह उच्च बनी हुई है।
- अधिक शिक्षित लोगों में बेरोजगारी की दर अधिक है। माध्यमिक और उससे ऊपर की शिक्षा प्राप्त लोगों की बेरोजगारी दर अन्य लोगों की तुलना में बहुत अधिक है।

चुनौती:

- श्रम बाजार के आंकड़े भारत के सामने मौजूद प्रमुख विकास चुनौती को पुष्ट करते हैं, अर्थात अधिक लाभकारी और उत्पादक रोजगार अवसरों का अपर्याप्त सृजन।
- उत्पादन प्रक्रिया अधिक पूंजी गहन और श्रम बचत वाली होती जा रही है। इससे रोजगार सृजन की चुनौती से निपटना मुश्किल हो रहा है।

आगे की राह:

- अधिक लाभकारी और उत्पादक रोजगार अवसरों के सृजन की चुनौती पर काबू पाना नीतिगत एजेंडे में सबसे ऊपर होना चाहिए।

प्रारंभिक परीक्षा के संभावित प्रश्न (Prelims Expected Question)

प्रश्न: हाल ही में जारी आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-

1. वेतनभोगी रोजगार में लगी महिलाओं की हिस्सेदारी में गिरावट आई है।
2. श्रम शक्ति का एक बडा हिस्सा अभी भी अनौपचारिक फर्मों में कार्यरत है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 न ही 2

Que. Consider the following statements regarding the recently released Periodic Labor Force Survey-

1. The share of women engaged in salaried employment has declined.
2. A large part of the labor force is still employed in informal firms.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1
(b) Only 2
(c) Both 1 and 2
(d) Neither 1 nor 2

उत्तर : C

मुख्य परीक्षा के संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्न: 'श्रम बाजार के आंकड़े भारत के सामने मौजूद प्रमुख विकास चुनौती को पुष्ट करते हैं, अर्थात अधिक लाभकारी और उत्पादक रोजगार अवसरों का अपर्याप्त सृजन।' इस कथन के संदर्भ में हालिया प्रकाशित रोजगार के आंकड़ों का विश्लेषण करें।

उत्तर का दृष्टिकोण :

- उत्तर के पहले भाग में हालिया प्रकाशित रोजगार के आंकड़ों की संक्षेप में चर्चा करें।
- दूसरे भाग में लाभकारी और उत्पादक रोजगार अवसरों के अपर्याप्त सृजन का कारण और उनका नए प्रकाशित आंकड़ों के संदर्भ में विश्लेषण करें।
- अंत में आगे की राह देते हुए निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।